

वर्ण प्रकरण

भाषा :- “हम अपने मन के भाव प्रकट करने के लिए वाग्यन्त्र की सहायता से जिन सांकेतिक ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें भाषा कहते हैं।”

मन के भाव प्रकट करने के लिए और साधन भी हैं, जैसे-हँसना, रोना आदि, अथवा हाथ या आँखों से संकेत करना, परन्तु सर्वश्रेष्ठ साधन भाषा ही है।

व्याकरण में भाषा के अन्तर्गत वे ही ध्वनियाँ आती हैं जो सार्थक हुआ करती हैं अर्थात् जो विचारों को व्यक्त करने में समर्थ हों।

व्याकरण :- साधु शब्दों का प्रयोग “धर्म” माना गया है। शास्त्रों में व्याकरण का स्थान मुख्य माना गया है। भाषा की शुद्ध और अशुद्धि का ध्यान रखना व्याकरण का परम कार्य है, कहा भी है :-

“व्याक्रियन्ते शब्दाः अनेनेति व्याकरणम्”

अर्थात् शब्दों के साधुत्व एवं असाधुत्व के नियमों का विवेचन जिस शास्त्र में किया गया हो उसे व्याकरण कहते हैं। अतः संक्षेप में व्याकरण की परिभाषा इस प्रकार भी की जा सकती है :-

“जो शास्त्र किसी भाषा का स्वरूप स्पष्ट करके उसके शुद्ध बोलने, लिखने और पढ़ने का ढंग सिखलाता है, उसे “व्याकरण” कहते हैं।”

व्याकरण के भाग :- हमारी बातचीत “वाक्यों” में होती है। वाक्य “शब्दों” से बनते हैं और शब्द “मूल-ध्वनियों” से। इन मूल-ध्वनियों को “वर्ण” कहते हैं। वर्ण, शब्द तथा वाक्य के आधार पर व्याकरण के ये तीन भाग होते हैं :-

1. वर्ण-विचार, 2. शब्द-विचार, 3. वाक्य-विचार।

1. वर्ण-विचार :- व्याकरण का वह भाग, जिसमें वर्णों के आकार, प्रकार, उच्चारण-स्थान तथा उन्हें मिलाकर शब्द बनाने के नियम बनाए जाते हैं, “वर्ण-विचार” कहलाता है।

2. शब्द-विचार :- व्याकरण का वह भाग, जिसमें शब्दों के प्रकार, रूप और व्युत्पत्ति से बनाए जाते हैं, “शब्द-विचार” कहलाता है।

3. वाक्य-विचार :- व्याकरण का वह भाग, जिसमें वाक्य, उसके अंगों तथा वाक्य के शब्दों के क्रम और पारस्परिक सम्बन्ध का वर्णन होता है “वाक्य-विचार” कहलाता है।

वर्ण-विचार

हम अपने मन के भाव बोलकर अथवा लिखकर प्रकट करते हैं। विचारों को लिखकर प्रकट करने के लिये जो चिन्ह अथवा संकेत नियत किये जाते हैं, उन्हें “वर्ण” कहते हैं।

भाषा में व्यवहृत छोटे से छोटे ध्वनि-द्योतक चिन्ह का नाम ही “वर्ण” है। वर्णों का उच्चारण कण्ठ, तालु, जिह्वा, दन्त, ओष्ठ, नासिका आदि उच्चारण यन्त्रों द्वारा होता है।

संस्कृत के वर्णों का विभाग और उच्चारण-स्थान :- वर्णों के निम्नलिखित दो भेद हैं :-

1. स्वर-वर्ण।
2. व्यञ्जन-वर्ण।

स्वर-वर्ण :- जिन वर्णों का बिना किसी और वर्णन की सहायता के, अपने आप स्पष्टतया उच्चारण किया जा सकता है, उन्हें स्वर कहते हैं, जैसे-अ, इ, उ आदि।

संस्कृत में 13 स्वर माने गए हैं :-

अ आ, इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ, लृ, ए ऐ, ओ औ।

मात्रिक भेद से इनके तीन भेद किए गए हैं :-

ह्रस्व स्वर (एक मात्रिक) :-

अ इ उ ऋ लृ।

दीर्घ स्वर (द्वि-मात्रिक) :- मूल स्वर ह्रस्व-दीर्घ

आ ई ऊ ऋ।

प्लुत स्वर (मिश्रित) :-

ए ऐ ओ औ संयुक्त-स्वर

ह्रस्व-स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का, दीर्घ-स्वर के उच्चारण में दो मात्रा का तथा प्लुत-स्वर के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है। प्लुत-स्वर को दर्शाने के लिए प्रायः ३ अंक स्वर के पश्चात् लगा दिया जाता है, जैसे— ओ३म्। अर्थात् लम्बी आवाज़ लगानी पड़ती है।

व्यञ्जन वर्ण :- जिन वर्णों का उच्चारण किसी स्वर की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता, उन्हें व्यञ्जन कहते हैं, जैसे :- क्, ख्, ग् आदि।

जब इनके साथ “अ” मिलाया जाता है तो ये क, ख, ग ऐसे लिखे जाएंगे। $k = क + अ$ ।

साधारणतया व्यञ्जन 33 माने जाते हैं, परन्तु अनुस्वार, अनुनासिक तथा विसर्ग को भी व्यञ्जन मानने पर संख्य 36 हो जाती है।

“क्” से “म्” तक पच्चीस व्यञ्जनों को पाँच वर्गों में विभक्त किया जाता है, प्रत्येक वर्ग में पाँच व्यञ्जन होते हैं :-

(अ) कवर्ग-क्।	ख्।	ग्।	घ्।	ङ्।
(ब) चवर्ग-च्।	छ्।	ज्।	झ्।	ञ्।
(स) ट्वर्ग-ट्।	ट्।	ड्।	ढ्।	ण्।
(द) तवर्ग-त्।	थ्।	द्व।	ध्व।	न्व।
(य) पवर्ग-प्।	फ्।	ब्व।	भ्व।	म्व।

इन पच्चीस व्यञ्जनों को “स्पर्श” कहते हैं, क्योंकि इसका उच्चारण करते समय कण्ठ आदि स्थानों से जीभ का पूरा स्पर्श होता है।

अन्तस्थ :- य। र्। लृ। व्।

ये चार वर्ण अन्तस्थ हैं, क्योंकि ये स्वरों और स्पर्श-व्यञ्जनों के मध्य में हैं। दूसरे शब्दों में ये अर्ध स्वर हैं अर्थात् आधे स्वर हैं और आधे व्यञ्जन अथवा स्पर्श और ऊष्म के मध्य में हैं, इसलिए अन्तःस्थ कहलाते हैं :-

ऊष्म :- श्। ष्। स्। ह्।

ये चार वर्ण ऊष्म कहलाते हैं।

अनुस्वार :- (अं)

अनुनासिक :- ँ (अँ) इन तीनों को अयोगवाह कहते हैं।

विसर्ग :- : (अः)

इस प्रकार कुल (13 स्वर + 36 व्यंजन) 49 वर्ण साधारणतः प्रयोग में आते हैं।

ध्वनि के विचार से वर्णों का उच्चारण स्थान :- कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका और जिह्वामूल ये सात स्थान वर्णोच्चारण के हैं। जिह्वा के स्पर्श से क्रमशः -

कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्तय, ओष्ठ्य, नासिक्य, जिह्वामूलीय बनते हैं।

(1) कण्ठ्य :- अ, आ, कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्) है, और विसर्ग (:)-इन वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठ है, अतः इन्हें **कण्ठ्य** वर्ण कहते हैं।

(2) तालव्य :- इ, ई चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) य्, श्-इन वर्णों का उच्चारण स्थान तालु है। अतः इन्हें 'तालव्य' वर्ण कहते हैं।

(3) मूर्धन्य :- ऋ, ॠ, टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र्, ष्-इनका उच्चारण मूर्धा से होता है अतः ये "मूर्धन्य" कहलाते हैं।

(4) दन्त्य :- ल्, तवर्ग-(त्, थ्, द्, ध्, न्) ल्, स्-इन वर्णों का उच्चारण स्थान दन्त है अतः ये "दन्त्य" कहलाते हैं।

(5) ओष्ठ्य :- उ, ऊ पवर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) उपध्मानीय (प और फ) से पहले आने वाला विसर्ग (प, फ) - इन वर्णों का उच्चारण स्थान "ओष्ठ" है अतः ये "ओष्ठ्य" कहलाते हैं।

(6) नासिक्य :- ङ्, भ्, ण्, न्, म् और अनुस्वार (ं) इनका उच्चारण स्थान "नासिका" है अतः यह "नासिक्य" कहलाते हैं।

(7) जिह्वामूलीय :- क्, ख् से पूर्ण आने वाला विसर्ग-(क्, ख्- क्, ख् से पूर्व अर्ध विसर्ग-सी दीखने वाली ध्वनि का उच्चारण स्थान जिह्वामूल है अतः इसे "जिह्वामूलीय" कहते हैं।

(8) दन्तोष्ठ्य :- "व्"-वकार का उच्चारण स्थान दन्त-ओष्ठ है अतः इसे "दन्तोष्ठ्य" कहते हैं।

(9) कण्ठतालव्य :- ए, ऐ-इन वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ-तालु है अतः ये "कण्ठतालव्य" कहलाते हैं।

(1) कण्ठोष्ठ्य :- ओ, औ-इन वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ-ओष्ठ है अतः ये "कण्ठोष्ठ्य" कहलाते हैं।

उच्चारण-स्थान-तालिका

मूलसूत्रः	उच्चारण-स्थान	स्वर	व्यंजन	अन्त-स्थ	ऊष्म
अकुह विसर्जनीयानां कण्ठः	कण्ठ	अ-आ	क् ख् ग् घ् ङ्		ह
इचुयशानां तालु	तालु	इ-ई	च् छ् ज् झ् ञ्	य्	श
ऋदुरषाणां मूर्धा	मूर्धा	ऋ-ॠ	ट् ठ् ड् ढ् ण्	र्	ष्

लृतुलसानां दन्तः	दन्त	लृ	त् थ् द् ध् न्	ल्	स्
उपपूषध्मानीयनोष्ठौ	ओष्ठ	उ-ऊ	प् फ् ब् भ् म् (प) (फ)	—	—
वकारास्य दन्तोष्ठम्	दन्तोष्ठ	—	—	व्	—
एदौतोः कण्ठतालु	कण्ठतालु	ए-ऐ	—	—	—
ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	कण्ठोष्ठ	ओ-औ	—	—	—
नासिका अनुस्वारस्य	नासिका	—	ञ् ङ् ण् न् म्	—	—
जिह्वामूलीयस्य	जिह्वामूल	—	(क) (ख)	—	—

संयुक्त व्यंजन :- जब दो या दो से अधिक व्यंजन स्वर से हीन होकर (आपस में मध्य में स्थित स्वर के व्यवधान से रहित होकर) एक रूप हो जाते हैं तो ऐसे वर्ण संयुक्त कहलाते हैं। जैसे :-

कर्म = इस शब्द में र्, म् का संयोग 'र्म' हो जाता है।

स्त्री = इस शब्द में स् + त् + र् का संयोग 'स्त्र्' हो जाता है।

इसी तरह निम्नलिखित शब्दों का संयोग भी होगा :-

क्ष = क् + ष।

ज्ञ = ज् + ञ।

त्र = त् + र।

द्य = द् + य।

ह्य = ह् + य।

क्र = क् + र।

द्र = द् + र।

ह = ह् + र।

ट्र = ट् + र

इत्यादि अन्य भी संयुक्त-वर्ण होंगे।

अभ्यास

- स्वरों और व्यंजनों में क्या अन्तर है ?
- दीर्घ और प्लुत स्वरों में क्या अन्तर है ?
- निम्नलिखित स्वरों को ह्रस्व, दीर्घ तथा मिश्रित श्रेणियों में पृथक्-पृथक् करके लिखिए :-
औ, ए, ई, आ, ऐ, ऊ, ऋ, उ।
- निम्नलिखित वाक्यों में संयुक्त, अन्तस्थ एवम् ऊष्म वर्णों को पृथक्-पृथक् श्रेणियों में लिखिए :-
देवदत्तः ईश्वरं भजति। क्षत्रियाः राष्ट्रं रक्षन्ति। विद्यालये गुरवः सन्ति। व्याकरणं पठ।
- निम्नलिखित वर्णों का उच्चारण स्थान लिखिए :-
घ, छ, ठ, लु, ब, व।
- तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य वर्णों को लिखिए।